14

ISSN No. : 2395-4000

प्रयाग-पथ

जुलाई – 2025

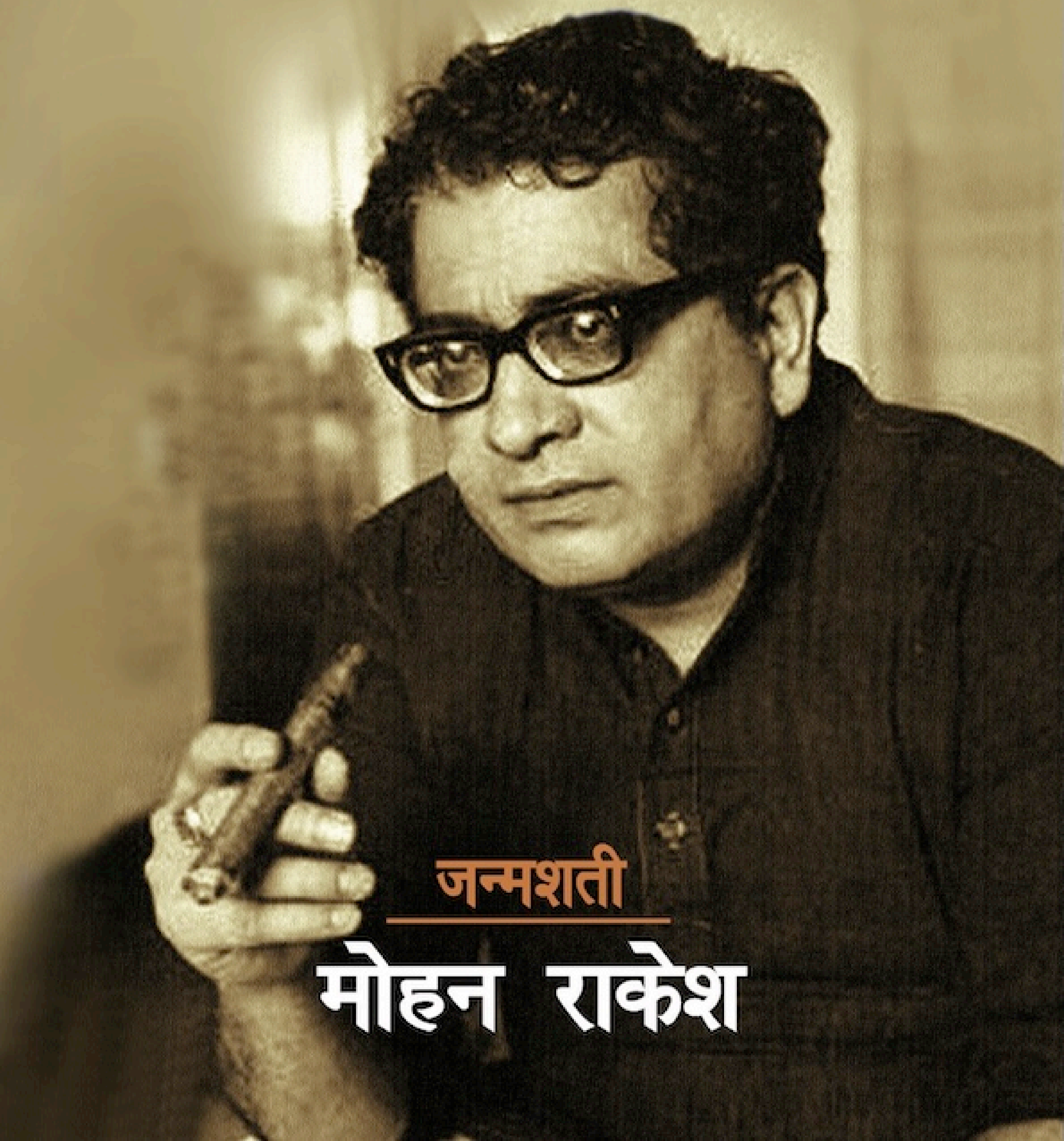

जन्मशती

मोहन राकेश

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति का संचयन

वर्ष : 11, संयुक्तांक : 18-20, पूर्णांक : 14, जुलाई : 2025

ISSN : 2395-4000

सम्पादक

हितेश कुमार सिंह

सह-सम्पादक

डॉ० नीतू सिंह

आवरण : अजय जेतली

अक्षर संयोजन : 'नीलकॉम', 515/258/24, सोहबतियाबाग, प्रयागराज, मो० 9935502950

मुद्रक : ग्राफिक क्रियेशन्स प्रा० लि० 164/3/50 टैगोर टाउन, प्रयागराज, 211002, उ० प्र०

मूल्य : एक प्रति : रु० 100 (व्यक्तिगत) रु० 150 (संस्थागत)

सदस्यता :
चार अंक : रु० 600.00 (डाक खर्च सहित)
आजीवन : रु० 5000.00 (पाँच हजार मात्र)

सम्पर्क :
353/183/2, टैगोर टाउन, प्रयागराज, 211002, उ० प्र०
मोबाइल : 9452790210
ई-मेल-prayagpathpatrika@gmail.com

- सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबन्धन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यावसायिक
- पत्रिका में प्रकाशित विचार सम्बन्धित लेखकों के अपने हैं, सम्पादक और प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
- सम्पादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।
- समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज होगा।
- स्वामी-सम्पादक-प्रकाशक-मुद्रक हितेश कुमार सिंह द्वारा 353/183/2, टैगोर टाउन प्रयागराज के लिए ग्राफिक क्रियेशन्स प्रा० लि० 164/3/50 टैगोर टाउन, प्रयागराज-211002 से प्रकाशित और मुद्रित।

अनुक्रम

- सम्पादक की ओर से......
- **अनामिका** की कविताएँ 1
- अनुभूति और चिंतन के सुंदर समन्वय से सृजित अनामिका की कविताएँ : **अरुण होता** 11

स्मृतियां

- इलाहाबाद विश्वविद्यालय का स्वर्ण-युग और अमरनाथ झा : **हरीश त्रिवेदी** 15
- इलाहाबाद विश्वविद्यालय और हमारा बचपन : **हेरम्ब चतुर्वेदी** 36

कहानियाँ

- गुम होती रोशनी : **यतीश कुमार** 41
- छलांग : **काव्या कटारे** 60

कविताएँ

- **सुभाष राय** की कविताएं 70
- **प्रदीप कुमार सिंह** की कविताएँ 81
- **अभिमन्यु प्रताप सिंह** की कविताएँ 87
- **लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता** की कविताएँ 97
- **लोकेश श्रीवास्तव** की कविताएँ 103
- **सत्यार्थ अनिरूद्ध पंकज** की कविताएँ 74
- **जस्टिस पंकज मित्थल** की कविताएँ 85
- **परमेश्वर फुकंवाल** की कविताएँ 91
- रेत की तरह उड़ता रहा : **शीला चौहान** 101

शताब्दी : मोहन राकेश

जीवन-प्रसंग

- 'मोहन राकेश : अधूरे रिश्तों की पूरी दास्तान'-परफ़ेक्ट रिश्तों की फैंटेसी और परिणाम : **नामदेव** 105
- 'कीर्तिशेष : मोहन राकेश'-समग्र स्मृति संश्लेष : **निधि सिंह** 111

नाटक-निलय

- 'आधे-अधूरे' : पारिवारिक विघटन की गाथा : **मुश्ताक अली** 122
- 'पैर तले की ज़मीन' : एक अधूरी संभावना : **रेणु अरोड़ा** 130
- 'आषाढ़ का एक दिन' : आधे-अधूरे रिश्तों की पूरी कथा : **मेरी हांसदा** 139
- 'लहरों के राजहंस' : दुविधाग्रस्त मनुष्यता के साथ अंतहीन संवाद : **श्रीधर करुणानिधि** 144
- 'शायद और हंः' : समकालीन समाज का यथार्थ : **विजेंद्र प्रताप सिंह** 149
- मोहन राकेश के नाटक : स्त्री-पुरुष रिश्तों की द्वन्द्व-चेतना में जीवन की कालजयी तलाश : **सत्यदेव त्रिपाठी** 156
- मोहन राकेश के नाटकों की रंग दृष्टि : **आभा गुप्ता ठाकुर** 169

कहानी-कृतंन

- 'एक और जिंदगी' : अहं का पराभव : **राजाराम भादू** 192
- 'मलबे का मालिक' : इंसान के भीतर उठते एक कारुणिक वैचारिक धुएँ की कहानी : **कुमार वीरेन्द्र** 197
- 'जानवर और जानवर' : कहानी का उत्तर औपनिवेशिक पाठ : **अजय वर्मा** 201
- 'इंसान के खण्डहर' : मनुष्यता पर लगे घुन पर घन : **शंपा शाह** 205
- 'परमात्मा का कुत्ता' : पूँजी और प्रजातंत्र के भ्रष्ट गठजोड़ पर एक करारा प्रहार : **राहुल शर्मा** 210
- 'मिस पाल' : किसी की जागीर नहीं : **एकता मंडल** 214
- 'पाँचवें माले का फ्लैट': विवशता और आत्मनिरीक्षण का केन्द्र : **खेमकरण 'सोमन'** 218
- 'आर्द्रा' : एक माँ का अन्तर्द्वन्द्व : **रमेश प्रजापति** 224
- 'नए बादल' : लोगों को सचेत करने का एक प्रयास : **जमुना कृष्णराज** 227

एकांकी-कुंज

- 'बहुत बड़ा सवाल' : सरकारी कार्य प्रणाली का यथार्थ : **मलय पानेरी** 229
- 'अंडे के छिलके' : छीजती संवेदना का एकाकीरूप : **सुनीता** 236

उपन्यास-लोक

- 'अन्तराल' : स्त्री-पुरुष संबंधों की पड़ताल : **आशुतोष कुमार सिंह** 241

डायरी–डेरा

- मोहन राकेश की डायरी : कितने अकेले-अकेले से दिन निकलते हैं : **कुबेर कुमावत** 247

विमर्श : 'फ़ुज्जार'

- 'फ़ुज्जार' का देश : देश की बात : **मधुरेश** 253
- 'फ़ुज्जार' : भेड़चाल वाले देश में आत्महत्या की ज़िद : **आशुतोष पार्थेश्वर** 266

स्मरण

- आपके जाने से कितना बेसहारा हो गया : **असलम हसन** 280

समीक्षाएँ

- बुलेट ट्रेन की झुरझुरी उर्फ 'चीनी मिट्टी' (रणविजय) : **विजय बहादुर सिंह** 288
- आत्मकथा के रूप में आभार ज्ञापन (राम जन्म सिंह) : **राजेश मल्ल** 292
- बिसरा चूल्हा-बिसरे स्वाद : अवध के लोक व्यंजन-लोक पाक-परंपरा का सांस्कृतिक ग्रंथ (उर्मिला सिंह) : **मिताश्री श्रीवास्तव** 298
- स्त्री-मन की 'ज्यामिति' (शान्ति नायर) : **सुलोचना दास** 301
- साहस के प्रति प्रतिबद्ध कविताएँ (राम किशोर मेहता) : **रंजीत सिंह** 307
- भारतीय संस्कृति को बचाने का प्रयास करती 'सियासत भी इलाहाबाद मे संगम नहाती है' (जयकृष्ण राय 'तुषार') : **अनिल कुमार सिंह** 310

सम्पादक की ओर से.............

अपने देश के कुछ लोग हिन्दी भाषा को लेकर विवाद पैदा कर रहे हैं। उसे राजनीतिक रंग दे रहे हैं जो कि समझ के परे है। परे इसलिए कि भाषा का विवाद साहित्य, कला अथवा संस्कृति से जुड़ा हुआ होना चाहिए जबकि यहाँ तो विवाद का कारण सत्ता है। हम सत्ता के लिए अपनी ही भाषा का अपमान कर रहे हैं। मेरे विचार से किसी भी देश के नागरिकों को अपने देश की किसी भी भाषा, कला, संस्कृति आदि पर सियासत नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह उस देश के मिट्टी की इज्जत होती है, उस देश की इज्जत होती है और फिर हिन्दी भाषा तो हमारी सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन है, यह हमारे देश का प्रतिनिधित्व करती है। यहाँ तक की इसकी सभी छोटी बहनों अर्थात् क्षेत्रीय भाषाओं की प्रगति भी इसी की प्रगति पर निर्भर है।

हिन्दी अपने देश के सर्वाधिक भू-भाग पर बोली जाने वाली भाषा है। इसको बड़ी बहन मानकर इसके प्रति उदार होने इसको सम्मान देने, समावेशी होने और इसके प्रति बने किसी भी दुराग्रह को त्यागने की आवश्यकता है। मैं मराठी, तमिल, मलयालम, बांग्ला आदि किसी भी भारतीय भाषाओं का निरादर नहीं करता, उनका विरोध नहीं करता। हिन्दी भाषा के साथ-साथ सभी भारतीय भाषओं को पढ़ा जाना चाहिए उनको समझा जाना चाहिए, उनका सम्मान होना चाहिए। साथ ही साथ हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि हम हिन्दुस्तानी लोग चाहे जितनी भाषाएं सीख लें, जान लें, उसका ज्ञान अर्जित कर लें किन्तु हमारे अवचेतन मन में हिन्दी ही होती है और हमारा सोचना, विचारना, जीवन-जीना इसी के सन्निध्य में हो पाता है। अतः हमें सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर एक बड़ी बहन के रूप में हिन्दी भाषा को सम्मान देना चाहिए उसको सुरक्षित, संरक्षित रखना चाहिए।

नयी कहानी आन्दोलन के त्रयी (मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेन्द्र यादव) में से एक मोहन राकेश (8 जनवरी 1925 - 3 दिसम्बर 1972) का मूल नाम मदन मोहन गुगलानी था और जिन्हें घर में 'मिद्दी' नाम से बुलाया जाता था। 'राकेश' उनका उपनाम था जो उनकी दीदी ने रखा था, जिसे उन्होंने अपनाया और लेखन कार्य में मोहन राकेश नाम से चर्चित हुए। मोहन राकेश का जन्म जंडीवाली गली, अमृतसर में हुआ था। वे मूलतः सिंधी थे। उनके पिता कर्मचन्द गुगलानी पेशे से वकील थे और बहुत पहले सिंध से पंजाब आ गए थे। मोहन राकेश ओरिएंटल कॉलेज, लाहौर से शास्त्री की परीक्षा पास की और वहीं से संस्कृत में एम.ए. किया। उन्होंने हिन्दी में एम. ए. डॉ. इन्द्रनाथ मदान की प्रेरणा से अध्यापन के दौरान सन् 1952 में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से किया। जीविका के लिए उन्होंने दिल्ली, जालंधर, शिमला और मुम्बई में अध्यापन कार्य किया। अपनी साहित्यिक अभिरुचि के कारण मोहन राकेश का अध्यापन कार्य में मन नहीं लगा और एक वर्ष तक उन्होंने 'सारिका' पत्रिका का सम्पादन किया। इस कार्य को भी अपने लेखन में बाधा समझकर स्वयं को सम्पादन से अलग कर लिया और जीवन के अन्त तक स्वतंत्र लेखन करते रहे और यही उनके जीविकोपार्जन का साधन रहा।

*मोहन राकेश का हिन्दी साहित्य में प्रथम पदार्पण कहानी विधा द्वारा हुआ। यद्यपि मोहन राकेश द्वारा लिखी पहली कहानी **'नन्हीं'** मानी जाती है किन्तु उनकी प्रथम प्रकाशित कहानी **'भिक्षु'** रही जो **'सरस्वती'** पत्रिका में छपी थी। किसी भी साहित्यकार की कृतियों में उसके व्यक्तित्व का कुछ न कुछ*